बाइबल टीचर

वर्ष 19 | जुलाई 2022 | अंक 8

सम्पादकीय

मैं आराधना में नहीं आऊंगा

आज अक्सर एक बात कलीसिया में सुनने को मिलती है कि मैं उसकी वजाह से आराधना में आना नहीं चाहता क्योंकि वे लोग दिखावा करते हैं। कई बार लोग कई प्रकार के कारण देते हैं कि हम उनके कारण कलीसिया में नहीं आयेंगे। कलीसिया इंसानों से मिलकर बनी है तथा इसमें हर प्रकार के लोग होते हैं। कुछ अपने विश्वास में कमज़ोर होते हैं तथा कुछ मजबूत होते हैं परन्तु कुछ लोगों के कारण सारी कलीसिया को बदनामी का सामना करना पड़ता है इसलिये हमें अपनी चौकसी करनी चाहिए ताकि हमारे विश्वास को ठेस न पहुँचे। ऐसा भी देखा जाता है कि कुछ लोग सोचते हैं कि हम बहुत पवित्र है और हम दूसरों से बेहतर है परन्तु उनकी यह सोच गलत है। हम भक्ति का भेष तो धारण करते हैं परन्तु मन से प्रभु के प्रति हमारी भक्ति नहीं होती। हमारा प्रयत्न होना चाहिए कि कलीसिया में सबके साथ मेल मिलाप से रहें।

पहली शताब्दी में भी यह बात मसीहियों में प्रचलित थी। आपस में मनमुटाव होता था तथा लोग एक-दूसरे में भेदभाव करते थे और इसीलिये प्रेरित पौलुस को उन्हें सिखाना पड़ा कि एक मसीही होते हुए हमारा व्यवहार कलीसिया में कैसा होना चाहिए? प्रेरित पतरस ने कहा था, ''इसलिये सब प्रकार का बैरभाव और छल-कपट और डाह और बदनामी को दूर करके। नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।'' (1 पतरस 2:1-2)। जब हम मसीह में बढ़ते हैं तो हमारा विश्वास दृढ़ होता जाता है तथा हम व्यर्थ की बातें नहीं करते। एक बार एक मसीही भाई ने मुझसे कहा कि आप लोग बड़ा लम्बा प्रचार करते हो, और यदि ऐसा चलता रहा तो मैं यहाँ आराधना में नहीं आऊंगा। कई बार हम ऐसी छोटी और हल्की बातें करके यह संकेत देते हैं कि हमारा विश्वास कितना कमज़ोर है। हम यह नहीं समझते कि हमें आत्मिक बातों को कितना महत्त्व देना है। छोटी-छोटी बातों के कारण हम आराधना में न आने की

धमकी देते हैं। प्रभु चाहता है कि हम अपने जीवनों में उसे प्रथम स्थान दें। उसने कहा था, ''सबसे पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो यह सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएगी (मत्ती 6:33) हमारे साथ एक बहुत बड़ी समस्या यह होती है कि हम दुनियादारी में इतने फंस जाते हैं कि हम आत्मिक बातों को अधिक महत्त्व नहीं देते। प्रेरित पतरस ने मसीहीयों से कहा था कि, ''हे प्रियो मैं तुमसे बिनती करता हूँ, कि तुम अपने आप को परदेशी और यात्री जानकर उन संसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। (1 पतरस 2:11)।

कई बार मसीही भाई आपस में पैसों का लेन-देन करते है और यदि पैसे के कारण कोई मतभेद हो जाता है तो अक्सर यह सुनने में आता है कि उस भाई या बहन ने उस कारण से आराधना में आना बन्द कर दिया है। हमें यह सोचना चाहिए कि जिस भाई के कारण यह हुआ है उसका दोष हम कलीसिया को या प्रभु को क्यों दे रहे हैं? अपनी गलती का दोष कलीसिया पर मत लगाईये। हमारा प्रयत्न यह होना चाहिए कि कुछ ऐसे कार्यों से दूर रहें जिनके कारण मण्डली में फूट हो सकती है। विशेषकर पैसे का लेन-देन, क्योंकि इसके कारण कई बार कठिन समस्याएँ पैदा हो जाती है। और यह भी देखा जाता है कि जब कोई किसी का पैसा लौटा नहीं पाता तो वह कलीसिया की आराधना में आना बंद कर देता है।

एक और बात देखने में आती है कि कई बार किसी के प्रति हमारे मन में गलत धारणा बनी हुई होती है या किसी भाई या बहन को हम पसंद नहीं करते और उनके कारण हम आराधना में आना नहीं चाहते। यह व्यवहार अच्छा नहीं हैं। यही बात पतरस ने मसीहीयों से कही थी कि आपस का बैरभाव छोड़कर एक-दूसरे से मिलकर रहो, प्रेरित पौलुस ने कहा था कि, मसीही बनने के बाद हमें अपने आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाना है। (इफि. 4:23)। जब हमारा आत्मिक स्वभाव उन्नति करता है तब हम अपने विश्वास में मजबूत होते जाते हैं।

जो मसीही यह जानते हैं कि उन्हें प्रभु के साथ चलना है वे दूसरी बातों पर जो उनके विश्वास को कमजोर करती है अपना ध्यान नहीं लगाते, और इसलिये पौलुस ने कहा था कि ''सौ मैं जो प्रभु में बंधुआ हूँ तुम से बिनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।'' (इफि. 4:1-3)।

हमेशा इस बात को याद रखिये कि प्रभु के प्रति जो हमारा प्रेम है उस प्रेम में कमी न आने दे। दुनिया की बातें हमारे और परमेश्वर के बीच अड़चनें बनकर आती हैं परन्तु उनका सामना कीजिये। कभी भी आराधना में आना बंद मत कीजिये। आपके और आपके प्रभु के बीच यह करार है कि आप किसी व्यक्ति के कारण आराधना में आना बंद नहीं करेंगे। अपनी बाइबल में इब्रानियों 10:19-25 को पढ़िये और अपनी आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहें। (इब्रा. 10:23)

अनुग्रह और उद्धार

सनी डेविड

बाइबल में लिखा है, कि वह जल-प्रलय इतना भयानक था, कि चालीस रात और चालीस दिन तक लगातार जबरदस्त बारिश होती रही। और जल पृथ्वी पर एक सौ पचास दिनों तक प्रबल रहा। और दस महिनों तक जल पृथ्वी पर घटता रहा और तब जाकर कहीं पहाड़ों की चोटियां दिखाई पड़ीं। हाल ही के कुछ वर्षों में कुछ ऐसी सच्चाईयां सामने आई हैं, जो इस बात की पुष्टि करती हैं कि किसी समय पृथ्वी पर वास्तव में एक बहुत भारी जल-प्रलय आया था। जैसे कि ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर मिट्टी से बने खिलौनों और बर्तनों आदि का पाया जाना। जिससे इस बात की पुष्टि होती है कि जल का स्तर किसी समय जमीन पर इतना अधिक हो गया था, कि जिस से पहाड़ों की चोटियां तक ढक गई थीं। एक और बात इसी संबंध में यह भी देखी गई है, कि ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों से नीचे आते समय जगह-जगह पर पानी के रूके रहने के निशान पाए गए हैं। यानि पानी पृथ्वी पर इतने अधिक समय तक खड़ा रहा था, और धीरे-धीरे घटा था, कि उससे जगह-जगह पर पहाड़ों पर जल के टिके रहने के निशान पड़ गए थे।

बाइबल हमें यह भी बताती है, कि यह जल प्रलय परमेश्वर ने जानबूझकर पृथ्वी पर भेजा था। क्योंकि परमेश्वर ने देखा था कि पृथ्वी पर उस समय लोग ऐसे पापी और चरित्रहीन हो गए थे, कि यहां तक कि उनके मनों में और सोच विचारों में जो कुछ भी उत्पन्न होता था, वह केवल बुरा ही होता था। यानि वे बुराई के सिवा और कुछ सोच ही नहीं सकते थे। उनकी आंखों में, और मन में और विचारों में केवल बुरा ही उत्पन्न होता था। सो परमेश्वर ने उस समय सारे जगत को नाश करने की ठान ली थी। किन्तु परमेश्वर ने उस पापी संसार में उस समय एक ऐसा व्यक्ति भी देखा था, जो परमेश्वर से डरता था, और बुराई से घृणा करता था। और बाइबल में उसके बारे में लिखा है, कि वह एक धर्मी पुरुष था, और अपने समय के सब लोगों में खरा था और वह परमेश्वर के साथ-साथ चलता था। और उस व्यक्ति का नाम नूह था।

सो जबकि परमेश्वर ने सारे जगत को नाश करने की सोच ली थी, तो भी, बाइबल कहती है, ''परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।'' सो परमेश्वर ने नूह से कहा था कि, 'तू गोपेर वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले, और उसमें कोठरियां बनाना, और भीतर बाहर उस पर राल लगाना। और इस ढ़ंग से उस को बनाना, जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ, चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की हो। जहाज में एक खिड़की बनाना, और उसके एक हाथ ऊपर उसकी छत बनाना, और जहाज की एक अलंग में एक द्वार रखना, और जहाज में पहला, दूसरा और तीसरा खण्ड बनाना। और सुन मैं आप पृथ्वी पर जल प्रलय करके सब प्राणियों को, जिनमें जीवन की श्वास है आकाश के नीचे से नाश करने पर हूं। और जब जो

पृथ्वी पर हैं मर जाएंगे। परन्तु तेरे संग में वाचा बांधाता हूं, इसलिये तू अपने पुत्रों, स्त्री और बहुओं समेत जहाज में प्रवेश करना। और सब जीवित प्राणियों में से तू एक-एक जाति के दो-दो अर्थात् एक नर और एक मादा जहाज में ले जाकर अपने जीवित रखना। एक-एक जाति के पक्षी, और एक-एक जाति के पशु, और एक-एक जाति के भूमि पर रेंगने वाले, सब में से दो-दो तेरे पास आएंगे, कि तू उनको जीवित रखे। और भांति-भांति का भौजन पदार्थ जो सबके खाने के लिये है, उनको तू लेकर अपने पास इक्ट्ठा कर रखना, जो तेरे और उनके भोजन के लिये होगा। और परमेश्वर की इस आज्ञा के अनुसार नूह ने किया।'

यहां विशेष रूप से इस बात पर ध्यान दें कि जैसे-जैसे परमेश्वर ने कहा था, नूह ने ठीक वैसे ही किया था। अर्थात् उसने गोपेर की लकड़ी से ही सारा का सारा जहाज बनाया था। और उसकी लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई भी उतनी ही रखी थी जितनी परमेश्वर ने बोली थी। खिड़की और द्वार उसने वहीं बनाए थे जहां परमेश्वर ने कहा था। और उतने ही खण्ड बनाए थे जितने बनाने की आज्ञा उसे परमेश्वर से मिली थी। अर्थात नूह ने न तो परमेश्वर की आज्ञा में कुछ जोड़ा था, और न ही उसमें से कुछ घटाया था। उसने ठीक वैसे ही सब कुछ किया था जैसे कि परमेश्वर ने उसे करने को कहा था। अब मान लें, कि परमेश्वर ने नूह को सिर्फ यही कहा होता, कि तू एक बड़ा जहाज बना ले और उसके भीतर मैं तुझे तेरे परिवार समेत सब को बचा लूंगा। तो फिर यह सोचना और करना नूह का काम था, कि वह कौन सी लकड़ी का उपयोग करता, और जहाज की लम्बाई और चौड़ाई और ऊंचाई कितनी रखता, और खिड़की और द्वार कहां और कितने बनाता। लेकिन क्योंकि परमेश्वर ने नूह को हर एक बात के लिये विशेष रूप से बता दिया था, इसलिये नूह ने परमेश्वर की हर एक बात का वैसे ही पालन किया था जैसे कि परमेश्वर ने नूह से कहा था। क्योंकि नूह परमेश्वर से डरता था, और उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करता था। और यही मुख्य कारण था, कि जबकि परमेश्वर ने और सब को तो नाश कर दिया था, पर नूह को उसके परिवार समेत बचा लिया था।

इस महान घटना के हजारों वर्ष बाद प्रभु यीशु मसीह के एक चेले, पतरस, ने बाइबल के नए नियम में, पहले पतरस की पत्री के तीसरे अध्याय की 20 और 21 आयतों में लिखकर इस प्रकार कहा था, कि जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था, जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए। और उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है, उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है। क्यों पतरस ने यहां कहा था, कि उसी पानी के दृष्टांत पर अब बपतिस्मा भी तुम्हें बचाता है? इसलिये, क्योंकि प्रभु यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने और स्वर्ग पर वापस जाने से पहले अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा था कि मेरे सुसमाचार को सारे जगत में जाकर सुनाओ और जो व्यक्ति सुनकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस 16:15-16)।

अर्थात् जिस प्रकार पानी के द्वारा परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से नूह के साथ

उसके परिवार को बचाया था। उसी प्रकार आज हमें भी वह पाप के कारण नाश होने से उस समय अपने अनुग्रह से बचाता है, जब हम उसके पुत्र मसीह में विश्वास करके अपने पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा के द्वारा पानी में गाड़े जाकर उसमें बाहर आते हैं। और पतरस कहता है, कि उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, पर शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है।

नूह परमेश्वर का पूरा विश्वास रखता था। पर वह केवल विश्वास करके ही जलप्रलय से नहीं बचा था। नूह ने परमेश्वर पर विश्वास किया था और उसकी आज्ञा को भी माना था। और इसलिये परमेश्वर ने उसे अपने अनुग्रह से बचाया था। और इसी प्रकार से हम सब का उद्धार भी परमेश्वर के अनुग्रह से ही होगा, लेकिन केवल तभी जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेंगे। अकसर लोग केवल विश्वास करने पर ही अधिक बल देते हैं। लेकिन बाइबल में ऐसे विश्वास को एक मरा हुआ विश्वास कहा गया है जो मनुष्य को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये प्रोत्साहित नहीं करता (याकूब 2:24, 26)।

परमेश्वर चाहता है कि न केवल हम उसमें और उसकी बातों में विश्वास ही करें, पर उसकी हर एक आज्ञा को भी वैसे ही मानें जैसे की वह चाहता है। (मत्ती 7:21)।

प्रभु-भोज

जे. सी. चोट

प्रभु-भोज मसीही उपासना का एक और विशेष नियम है। यीशुमसीह इस बात से परिचित था कि मनुष्य भूल जाता है। इसलिये वह कोई ऐसी वस्तु छोड़कर जाना चाहता था जिसके द्वारा मनुष्य को उसके बलिदान का निरन्तर स्मरण रहे। उसी यादगार को प्रभु-भोज कहा जाता है।

इससे पहिले कि इस विषय में हम आगे देखें, हम पहिले यह देखेंगे कि इसकी स्थापना कैसे हुई थी। मत्ती 26:26-28 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, ''जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो खाओ, यह मेरी देह है। फिर उसने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा तुम इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित बहाया जाता है। यहां इस बात पर ध्यान दें कि इस यादगार को प्रभु ने कितने साधारण शब्दों में दिया था। प्रभु ने कहा, कि रोटी उसकी देह की प्रतीक ठहरेगी और इस कारण उसकी देह को याद करने के लिये उसमें से खाया जाए। फिर उसने कहा, कि कटोरा या प्याला, अर्थात् दाखरस, उसके लोहू का प्रतीक होगा और इसलिये उसके लोहू को याद करने के लिये उसमें से पिया जाय। दूसरे शब्दों में, प्रभु नहीं चाहता था कि उसके अनुयायी उसके उस बलिदान को भूल जाएं जो उनके लिये क्रूस के ऊपर होने जा रहा था। परन्तु प्रत्येक प्रभु के दिन (रविवार)

को उसकी देह तथा उसके लोहू को स्मरण करने के लिये वे रोटी तथा प्याले में भाग लिया करें, और इस प्रकार उसके बलिदान का सुसमाचार उनके मनों में सदा ताजा बना रहे।

इसी प्रकार 1 कुरिन्थियों 11:20-29 में कुरिन्थुस के मसीही भाइयों को लिखकर पौलुस इस प्रकार कहता है, ''सो तुम जो एक जगह में इक्ट्ठे होते हो तो यह प्रभु-भोज खाने के लिए नहीं। क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहला अपना भोज खा लेता है, सो कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है। क्या खाने-पीने के लिए तुम्हारे घर नहीं, या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिनके पास नहीं है उन्हें लज्जित करते हो? मैं तुम से क्या कहूं, क्या इस बात से तुम्हारी प्रशंसा करूं? मैं प्रशंसा नहीं करता। क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी कि प्रभु यीशु ने, जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, कि यह मेरी देह है, मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा, यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है, जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। अब यहां हम देखते हैं कि आरंभ में तो पौलुस उन्हें इस कारण डांटता है क्योंकि वे लोग प्रभु-भोज का पालन अनुचित रीति से कर रहे थे। जिस प्रकार से और जिस उद्देश्य से उसमें भाग लेने की आज्ञा प्रभु ने दी थी उसके विपरीत, उन लोगों ने उसे अपने एक भोज में परिवर्तित कर दिया था, जहां वे खा-पीकर मतवाले हो रहे थे। इस प्रकार के उद्देश्य से प्रभु-भोज कदापि नहीं दिया गया था। सो वह आगे उन्हें उसके वास्तविक उद्देश्य से परिचित करवाता है और उन्हें समझाता है कि उसमें उन्हें किस प्रकार भाग लेना चाहिए। पौलुस उन्हें यह भी याद दिलाकर कहता है कि इस संबंध में जो भी आज्ञा उसे मिली है वह उसे स्वयं प्रभु की ओर से मिली है, और फिर वह उन्हें ये विशेष बातें बताता है-

1. जिस रात को प्रभु पकड़वाया गया था उसी रात को उसने इस भोज की स्थापना की थी।
2. उसने कहा कि रोटी उन्हें उस देह की याद दिलाएगी जो उन के लिए तोड़ी गई थी।
3. इसी प्रकार, उसने प्याले के विषय में कहा, कि उसमें से पीकर उन्हें उसके लोहू को याद करना चाहिए।
4. जितनी बार उसमें भाग लिया जाता है, उसके द्वारा प्रभु की मृत्यु का, जब तक वह न आए, प्रचार होता हैं

5. जो लोग इस भोज में अनुचित रीति से भाग लेते हैं वे प्रभु की देह तथा उसके लोहू का निरादर करने के कारण दोषी ठहरेंगे।
6. प्रत्येक जन स्वयं अपने आप को जांचे और तब उसमें भाग लें।
7. जो प्रभु भोज को पहिचाने बिना उसमें भाग लेते है वे उसे खा-पीकर अपने ऊपर दण्ड लाते हैं।

सो ये कुछ खास बातें पौलुस इस विषय में बताता है, और हमारे लिए इस पर ध्यान देना बड़ा ही आवश्यक है।

जबकि हम इस संबंध में देख रहे हैं, तो यहां इसी विषय में कुछ अन्य आवश्यक बातों को भी देख लें-

1. प्रभु इन बातों से यह शिक्षा नहीं दे रहा है कि एक ही प्याले का इस्तेमाल किया जा सकता है। अक्सर कुछ लोगों की सम्पूर्ण मंडली ऐसा निर्णय बना लेती है कि प्रभु-भोज में केवल एक ही प्याले का इस्तेमाल किया जा सकता है, और इसलिये वे सब केवल एक ही प्याले में से पीने लगते हैं। किन्तु, यहां प्रभु प्याले या बर्तन के महत्व को नहीं दिखा रहा था, लेकिन वह उस पदार्थ या चीज के महत्व को बता रहा था जो उस प्याले के भीतर थी। सो वह दाखरस चाहे एक प्याले में हो या अनेक प्यालों में हो इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता, विशेष बात यह है कि उस पदार्थ को हम मसीह के लोहू को याद करने के लिये पीए। एक बार एक व्यक्ति उपासना करने के लिये एक ऐसी मण्डली में गया जिनका विश्वास था कि केवल एक ही प्याला होना चाहिए। सो जब प्याला उसके पास लाया गया तो उसने उस प्याले में का सारा दाखरस पी लिया। इस पर जब मंडली के अन्य लोगों ने यह कहकर ऐतराज किया कि उसने सारा का सारा दाखरस पी लिया है और अब मंडली के अन्य लोग क्या करेंगे? तो उस मनुष्य ने प्रभु की बात याद दिलाकर उनसे कहा कि प्रभु ने स्वयं कहा था। कि तुम सब इसमें से पीओ। यह केवल एक ऐसा उदाहरण है जिससे हम यह देखते हैं कि प्याले जैसी साधारण सी बात को लेकर लोग सच्चाई से किस तरह बहक जाते हैं। यद्यपि एक प्याले को इस्तेमाल करने में कोई बुराई नहीं है, किन्तु स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से तथा अन्य कारणों से, व्यक्तिगत प्याले का इस्तेमाल करना ही अच्छा है।

2. प्रभु-भोज में भाग लेने के द्वारा न केवल लोग मसीह की देह तथा उसके लोहू को ही स्मरण करते हैं, परन्तु इस के द्वारा अन्य सभी लोगों पर वे इस बात को भी प्रकट करते हैं कि ये वे लोग हैं जो प्रभु यीशु के दोबारा आने की बाट जोहते हैं। यदि ऐसा न होता तो वे इस में भाग नहीं लेते।

3. जब प्रभु-भोज में भाग लिया जाता है तो वह एक ऐसा समय होता है जिसमें प्रत्येक मनुष्य के पास यह अवसर होता है कि वह पिछले सप्ताह में व्यतीत किए अपने सारे जीवन पर विचार करे। और यदि वह मनुष्य प्रभु की आज्ञानुसार प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन मण्डली के साथ एकत्रित नहीं हुआ है तो उसे चाहिए कि जितने समय तक वह मण्डली में नहीं आया है उस समय में व्यतीत किए गए अपने जीवन पर वह विचार करे, और इस बात पर विचार करे और अपने आपको जांचकर

देखें कि वह आत्मिक दृष्टिकोण से कहां है। यदि मनुष्य समझता कि वह जहां तक उससे संभव है, प्रभु के प्रति एक विश्वासी जीवन व्यतीत कर रहा है, तो स्वाभाविक ही है कि उसे प्रभु-भोज में भाग लेना चाहिए। किन्तु यदि वह जानता है कि उसके जीवन में पाप है तो उसे चाहिए कि प्रभु-भोज में भाग लेने से पहिले वह अपने पाप से मन फिराए और अपने जीवन को सही करे, और केवल तभी उसे प्रभु-भोज में भाग लेना चाहिए।

4. यदि मनुष्य अपने आप को नहीं जांचता और अपने जीवन में अनुचित बातों के रहते हुए भी प्रभु-भोज में भाग लेता है, तो उस खाने-पीने के द्वारा उद्धार पाने के विपरीत, वह अपने ऊपर दण्ड लाता है। यह सच है कि हम में से कोई भी पूर्ण तरह से सिद्ध नहीं है क्योंकि हम सब चूक जाते हैं और पाप करते हैं। किन्तु प्रभु भी इस बात को जानता है कि हम सिद्ध नहीं है, परन्तु फिर भी जब हम अपनी ओर से अच्छा तथा प्रभु के प्रति विश्वासी जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करते हैं, तो हम उसमें भाग लेने के योग्य ठहरते हैं। परन्तु यदि कोई मनुष्य जान-बूझकर और मूढ़ता से या असतर्कता से पाप करता है, तो वह प्रभु भोज में भाग लेने को तैयार नहीं है। किन्तु यदि फिर भी वह भाग लेता है तो वह अपने आप को तथा अन्य लोगों को धोखा देता है, क्योंकि वह समझता है कि वह जो कर रहा है सही कर रहा है। लेकिन प्रभु जानता है। इसलिये उस मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन को ठीक करे ताकि वह प्रभु-भोज को आत्मिक तथा पवित्र शास्त्र की शिक्षानुसार लेने के योग्य ठहरे।

5. हमें प्रभु-भोज को कुछ ही लोगों तक सीमित नहीं कर देना चाहिए, अर्थात् ऐसा नहीं करना चाहिए कि उसमें भाग लेने को अन्य सबको मना कर दें और केवल कुछ चुने हुए लोगों को ही प्रभु-भोज दें। पवित्र वचन यह सिखाता है कि भाग लेते समय प्रत्येक मनुष्य स्वयं अपने आप को जांचे। यदि कोई मनुष्य प्रभु की कलीसिया का सदस्य नहीं है लेकिन फिर भी उसमें भाग लेता है तो इस पर एतराज न उठाएं, किन्तु वह व्यक्ति जब सच्चाई को सीख लेगा तो वह परमेश्वर की आज्ञा का पालन उसके बताए अनुसार करेगा। परन्तु यदि हम उसको भाग लेने के लिए मना कर देंगे तो कदाचित वह अपना संबंध हम से तोड़ ले और सच्चाई को न जान पाए।

अन्त में, हम प्रेरितों 20:7 में यह पढ़ते हैं, कि प्रथम मसीही लोग सप्ताह के पहिले दिन रोटी तोड़ने के लिए इक्ट्ठे हुए थे। इसलिये, ऐसा ही हमें भी करना चाहिए। परन्तु कौन से सप्ताह के पहिले दिन? प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन। आपको या मुझे या किसी भी अन्य व्यक्ति को यह अधिकार किसने दिया है कि किसी एक सप्ताह के पहिले दिन को विशेष रूप से प्रभु का दिन करके माना जाए, और केवल उसी दिन प्रभु-भोज लिया जाए? ऐसा अधिकार किसी को नहीं दिया गया है इसलिये जैसा परमेश्वर ने दर्शाया उसका वैसे ही पालन करें, अर्थात् उसके लोगों को चाहिए कि वे प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन को एकत्रित होकर प्रभु-भोज में भाग लें तथा उसकी उपासना करें।

परमेश्वर की सहायता

सूज़ी फ्रैड्रिक

पुराना नियम बहुत से ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है जब परमेश्वर ने विश्वासी पुरुषों तथा स्त्रियों की कठिन समय में सहायता की थी। नये नियम में हमें यह बताया गया है कि हम उनके उदाहरणों से सीखें। (रोमियों 15:4)। आईये अब इसके विषय में देखें तथा उसके विश्वास से अपने लिये कुछ पाठ सीखें।

योकेबेद को पूरा भरोसा था कि परमेश्वर कठिन समय में उसकी सहायता करेगा। वह यह जानती थी कि परमेश्वर अपने विश्वासी लोगों की सदा सहायता करता है। योकेबेद मूसा की मां थी, जिसने इस्त्राएल जाति को मिस्त्र के दासत्व से स्वतंत्र कराने में अगुवाई की थी। (निर्गमन 6:20)। मूसा के जन्म के समय एक बहुत भयानक नियम निकाला गया था: फ़िरौन जो (मिस्त्र का शासक था), उसने यह आज्ञा निकाली कि, "इब्रियों के जितने बेटे उत्पन्न हो उन सब को तुम नील नदी में डाल देना, और सब बेटियों को जीवित रहने देना" (निर्गमन 1:22)। परन्तु मूसा की माता ने उसे मिस्त्रियों से छिपाकर तीन महीने तक अपने घर में रखा। जब बहुत समय तक वह उसे छिपा न सकी, तब उसने उसे एक टोकरी में रखकर नदी के किनारे पर छोड़ दिया। जब फ़िरौन की बेटी नदी पर नहाने के लिये आई, उसने मूसा को वहां पड़े हुए देखा। छोटे से सुन्दर बच्चे को देखकर और यह देखकर की वह रो रहा है, उसको उस पर दया आई। (निर्गमन 2:6)। उस समय से लेकर तथा जब तक वह बड़ा हुआ वह फ़िरौन की बेटी की निगरानी में रहा अर्थात उसने उसे पाला पोसा। फ़िरौन के लोग मूसा को कोई भी हानि पहुंचाने से डरते थे। हम इब्रानियों 11:23 से सीखते हैं कि विश्वास के द्वारा ही मूसा के माता-पिता ने उसे तीन महीने तक छिपा कर रखा। क्योंकि वे जानते थे कि बालक सुन्दर है, तथा वे राजा की आज्ञा से न डरे। उनका परमेश्वर में पूर्ण विश्वास था कि वह इस बच्चे की रक्षा करेगा।

मसीही लोगों को भी आज परमेश्वर में अपना पूरा विश्वास रखना चाहिये। वे परमेश्वर पर पूर्ण रूप से निर्भर कर सकते हैं कि कठिन समय में वह उनकी सहायता करेगा। उसका पुत्र प्रभु यीशु हमसे कहता है, "इसलिये पहिले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज़ करो तो यह सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)। पिछली आयतों में वह बताता है कि वह किन वस्तुओं के विषय में बात कर रहा है। वह कहता है कि हमें खाने, पीने और पहिनने की चिन्ता नहीं करनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को जानता है और वह उन्हें प्राप्त करने में हमारी सहायता करेगा। कई बार हो सकता है कि हमारे साथ बहुत बुरी घटना घटे; परन्तु परमेश्वर जानता है कि हमारे लिये उससे अच्छाई कैसे उत्पन्न हो। रोमियों 8:28 में प्रेरित पौलूस लिखते हुए कहता है, "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। इस बात पर ध्यान दीजिये कि इन दोनों पदों में परमेश्वर हमसे कुछ अपेक्षा करता है अर्थात वह हम से कुछ चाहता

है। यदि हम उसके राज्य की खोज करते हैं, तथा उसके राज्य (कलीसिया) में "बुलाए हुए लोग हैं" तब हम ऐसी आशा कर सकते हैं कि वह हर पल हमारी सहायता करेगा तथा हमारे परिवारों को आशीषित करेगा।

योकेबेद का उदाहरण आज की स्त्रियों को शिक्षा देता है कि हमें परमेश्वर में अपना पूरा भरोसा रखना चाहिए।

संसार की प्रकृति

फ्रेंक पैक

एक और सत्य जो परमेश्वर की योजना में कष्ट के महत्व को समझने में हमारी सहायता कर सकता है, स्वयं संसार की प्रकृति में है। प्राकृतिक संसार की अति सुस्पष्ट विशेषताओं में से एक इसकी एकरूपता है। विज्ञापन अपने विभिन्न रूपों में प्राकृतिक संसार की निरंतरता की अवधारणा पर बना है। एक समान व्यवहार करने की तत्व की प्रवृत्ती को प्राकृतिक नियम कहा जा सकता है। प्रकृति में इन नियमों के काम करने (या सिद्धांतों की एकरूपता) से लोग पृथ्वी पर वास करने, इसे अपने वश में करने और अपनी भलाई के लिए इसकी शक्तियों का इस्तेमाल करने के योग्य होते हैं। तत्व की वही एकरूपता जो भले लोगों को भले उद्देश्यों के लिए इसका इस्तेमाल करने का अवसर प्रदान करती है, वही दुष्ट लोगों को बुरे उद्देश्यों के लिए तत्व का इस्तेमाल करने के योग्य बनाती है। शिक्षा, संस्कृति और आराधना के लिए भवन बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला लोहा हथियार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हो सकता है जिससे लोग युद्ध करते हैं, चाहे उनका उद्देश्य अधर्म के लिए ही हो।

उदाहरण के लिए, आग का यदि सही ढंग से इस्तेमाल किया जाए तो मनुष्य के लिए एक अद्‌भुत हथियार है। यह उसके घर को गर्म रखती है, उसका भोजन पकाती है और मशीनें व फैक्ट्रियां चलाने के लिए ऊर्जा उत्पन्न करती है। परन्तु, वही आग जो कुछ दूरी से मनुष्य के शरीर को गर्म रखती और आराम देती है, शरीर के अधिक निकट आने पर उसे बहुत हानि पहुंचा सकती है। जो आग भोजन बनाने के लिए लकड़ियों को जलाती है वही आग यदि इसे अन्य प्राकृतिक शक्तियों से नियंत्रण में न रखा जाए उस गांव को जला भी सकती है जिसमें हम रहते हैं।

परमेश्वर द्वारा आग के स्वभाव को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियमों को भंग करने पर, यदि कभी किसी व्यक्ति या उसकी सम्पत्ति को खतरा हो जाए तो क्या हो? यदि परमेश्वर किसी के हर निर्णय पर कि आग के गुण उसके उद्देश्यों के अनुकूल नहीं है, हर बार हस्तक्षेप करे तो? बार-बार हस्तक्षेप करने से किसी को पता नहीं चल पाता कि प्राकृतिक संसार किसी विशेष घटना में सामान्य

व्यवहार करेगा या नहीं। कितनी अव्यवस्था पैदा हो सकती है। इस अव्यवस्था को सृष्टि की सभी प्राकृतिक शक्तियों से गुणा करें। यदि कोई प्राकृतिक नियम न होता, तो स्वेच्छा और नैतिक जिम्मेदारी न रहती, गलत कार्य होते ही नहीं। यह एक बहुत बड़ी आशीष है कि मनुष्य के मन में आने वाली प्रत्येक इच्छा को पूरा करने के लिए परमेश्वर अपने संसार के प्राकृतिक कार्य में हस्तक्षेप नहीं करता।

इसी प्रकार, परमेश्वर अपने लोगों को विश्वासी होने के प्रतिफल के रूप में कष्ट से बचाव करने की प्रतिज्ञा नहीं करता। आमतौर पर यह पूछा जाता है कि दुष्ट लोग क्यों समृद्ध होते हैं और धर्मी लोगों पर ही कष्ट क्यों आते हैं? बहुत पहले भजन 73 को लिखने वाला भी इसी समस्या से जूझता था। नये नियम में, परमेश्वर ने अपने लोगों से यह प्रतिज्ञा नहीं की कि वह उन्हें मनुष्य पर आनेवाली सामान्य बुराईयों से बचाने के लिए एक ईश्वरीय बाड़ लगा देगा। परमेश्वर ने मसीही लोगों को कैंसर या किसी अन्य घातक बीमारी से सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा नहीं की हैं। मैं मसीही हूं तो इसका यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर मेरे प्रियजनों को मृत्यु से बचा लेगा। मसीही होने से मुझे सड़क पर दुर्घटना से सुरक्षित होने की गारंटी भी नहीं मिलती है। यदि परमेश्वर ने अपने बच्चों से इस प्रकार की विशेष कृपा दृष्टि रखने की प्रतिज्ञा की होती, तो प्राकृतिक नियमों की कार्य प्रणाली में परमेश्वर के किसी बच्चे के खतरे में होने पर कभी भी विघ्न पड़ जाता। उसके प्रति प्रेम और उसके नाम को महिमा देने के लिए परमेश्वर की सेवा करने के बजाय, लोग अकाल, कष्ट और मृत्यु की बीमा योजना (अर्थात सांसारिक लाभ) के लिए के लिए उसकी सेवा करेंगे। धर्म मात्र अपने हित साधने का साधन ही बन जाएगा; शुद्ध मन और नि:स्वार्थ सेवा करने का अवसर नहीं रहेगा।

थिस्सलुनीकियों के उदाहरण का प्रभाव (1:8-10)

अर्ल डी ऐडवर्डस

क्योंकि तुम्हारे यहां से न केवल मकिदुनिया और अख्या में प्रभु का वचन सुनाया गया, पर तुम्हारे विश्वास की जो परमेश्वर पर है, हर जगह ऐसी चर्चा फैल गई है कि हमें कहने की आवश्यकता ही नहीं। क्योंकि वे आप ही हमारे विषय में बताते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ; और तुम कैसे मूरतों से परमेश्वर की ओर फिरे ताकि जीवित और सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, और उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहो जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात यीशु की, जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है।

आयत 8, यह आयत, 9 और 10 आयत के साथ बताता है कि किस भाव से

थिससलुनीके के विश्वासी उदाहरण थे (आयत 7)। इस तरह से उनके उदाहरण का विचार इस अध्याय के अंतिम तीन पदों में लगतार विद्यमान है। प्रभु का वचन (सुसमाचार), साथ ही साथ परमेश्वर के प्रति उनके विश्वास उनके मानक के रूप में परमेश्वर के संदेश का स्वीकार किया जाना की चर्चा फैल गई। उनके वर्तमान विश्वास का लक्ष्य कोई मूर्ति नहीं था परन्तु सच्चा परमेश्वर था।

चर्चा फैल गई ऐसा वर्णन करता है जैसे गड़गड़ाहट या तुरही की आवाज जो गूंजती है। पूर्ण काल क्रिया का प्रयोग संकेत करता है यह सुनाई दिया गया और अभी तक सुनाई दे रहा है। अर्थात थिस्सलुनीकियों की कलीसिया एक गूंजने वाला यंत्र बन गई थी। इस घटना की संभावना की बढ़त इस तथ्य के साथ हुई कि इस नगर में एक बढ़िया बंदरगाह था जहां लगातार व्यावसायिक कार्य होते रहते थे और यह इगनेशियन मार्ग पर था, जो कि पूर्व और पश्चिम जाने के लिए रोमी मुख्य मार्ग था। इस तरह से उनसे सुसमाचार और उनके स्वीकार किए जाने के विषय वचन सारे मकिदुनिया, अख्या और हर जगह पर पहुंच गया (हर जगह पर)।

हर जगह संभवत: एक अतिश्योक्ति है-एक विस्तार जो धोखा देने के लिए प्रयोग नहीं किया गया। यह प्रभावशाली ढंग से बताता है कि जो संदेश पौलुस और उसके साथियों ने लिया था उसके विषय में अब और कहने की आवश्यकता ही नहीं थी। लोग जिनकी इनके साथ भेंट हुई, सब कुछ पहले ही सुसमाचार सुन लिया था। संदेश कम से कम दो साधनों के द्वारा फैला पहला, वहां से गुजरने वाले लोगों के द्वारा और उनको बताया गया और उनके द्वारा मनपरिवर्तन करने के द्वारा और दूसरा अपने लोगों के प्रचार करने के लिए भेजने के प्रयास करने के द्वारा।

क्या हमें थिस्सलुनीकियों के आदर्श का अनुसरण करने की जरूरत है ताकि सुसमाचार हमसे से बाहर जाए और हमारा विश्वास जाना चाहिए?

आयत 9, यह आयत, 10 आयत के साथ, कहानी की मुख्य बातें प्रकट करता है जो पोलुस और उसके साथी दूसरों से सुन रहे थे। उन्होंने एक वास्तविक नमस्कार या अभिवादन दिया था।

थिस्सलुनी के लोग फिरे थे। उसी शब्द का अनुवाद बदल गए के रूप में करता है और दर्शाता है कि इस बदलाव के बिना कोई व्यक्ति स्वर्ग के राज्य का भाग नहीं बन सकता (मत्ती 18:3)। विश्वास और पश्चाताप या मान का बदलाव, उनकी जीवन शैली के बदलाव को लाया। मुड़ जाना शब्द (एपिस्ट्रीफो)। से आया है, जो कि मुड़ने के लिए पुरानी क्रिया है। जिसे प्रेरितों के काम में परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए अभिव्यक्ति किया गया है (देखें प्रेरितों के काम 3:19)।

यह बदलाव मूर्तियों या बुतों से था, जो देवताओं जैसे ज्यूस, अपोलो और अरतिमिस को प्रस्तुत करते थे (रोमी देवी डायना के लिए यूनानी प्रतिरूप); परन्तु क्योंकि देवता मात्र कल्पनाओं में ही होते हैं, बुत जिसकी वास्तव में पूजा होती थी। मकिदुनिया के लगभग सभी छुट्टियां और त्योहार इन्हीं देवताओं पर आधारित होते थे, उनके मंदिर सामाजिक जीवन के मुख्य स्थान होते थे। इन नए मसीहियों को अपने पड़ोसियों के साथ इन क्रियाओं को छोड़ने के लिए सहमत होना था। वे

सकारात्मक पक्ष की ओर मुड़े, जो बहुत अच्छा था- एक जीवित और सच्चे परमेश्वर की ओर जो मृतक नहीं था और मूर्तियों की तरह निष्क्रिय नहीं था जिन्हें उन्हें निकालना था (यहोशू 3:10; मिर्ययाह 10:1-7)। उन मूर्तियों की तुलना में परमेश्वर सच्चा या वास्तविक है, जो कल्पना की गढंत कहानियां हैं (1 कुरिन्थियों 8:4-6)।

थिस्सलुनीके के लोग इस सच्चे परमेश्वर की ओर उसकी सेवा करने के लिए मुड़ गए थे। सेवा के लिए यूनानी शब्द डोयूलियो लिया गया है, जिसका वास्तविक अर्थ है एक दास के समान सेवा करना और लगातार सेवा जिसका वास्तविक अर्थ है एक दास के समान सेवा करना, और लगातार सेवा करते रहना। मसीहियत का अर्थ है इस संसार में अपने जीवन भर के लिए स्वयं को पूर्ण रूप से देना (रोमियों 6:15-18)। यीशु ने हमें सेवा करने का सिद्ध उदाहरण दिया है (मत्ती 20:28)। यदि विषय को सही तरीके से देखा जाए तो हमारी सेवा आनन्द पूर्ण होगी।

आयत 10, आयत 9 में, थिस्सलुनीकियों को सेवा करते हुए देखा गया था। यहां हम उनको बाट जोहते हुए सेवा करते देखते हैं। बाट जोहना यूनानी शब्द अनामिनों से लिया गया है। वे यीशु की वापसी की बाट जोह रहे थे। रॉबर्टसन ने कहा कि अनामीनेन वर्तमान क्रिया का सामान्य रूप है और इसलिए यह प्रत्यक्ष है और अर्थ है बाट जोहते रहना। मसीही लोग प्रभु के आने की निरंतर आशा में लगे हुए हैं।

इन पदों में, हम उन मुख्य बातों को देखा है जो पौलुस ने उनको प्रचार किया था। (अन्य जातियों के लिए संदेश, देखें प्रेरितों के काम 14:15-17; 17:22-31)। यीशु प्रतिज्ञा करता है कि वह वापस आएगा (यूहन्ना 14:3), और यह कि उसका आना आज्ञा मानने वालों के लिए एक बहुत बड़ी आशीष होगी, इसलिए वे उसकी उत्साह से बाट जोहते हैं (फिलिप्पियों 3:20)। इस कारण से परिपक्क मसीहियों के पास परमेश्वर के दिव्य पुत्र की वापसी का लगातार बाट जोहने का अनुभव है। उसका प्रभुत्व प्रमाणित हुआ जब उसने (पिता ने) उसे मरे हुओं में से जिलाया (1 पतरस 1:3; प्रेरितों के काम 2:24-33)। यह वही जीवित यीशु है-मृतक मूर्तियों के विपरीत - जो हमारी आराधना का लक्ष्य है।

यह भी वही यीशु है जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है, क्योंकि हम तो गंभीर खतरे में थे। भले ही लोकप्रिय न हो, नरक में विनाश, अनन्त दण्ड का विचार, बाइबल पर आधारित है। यहां एक बार फिर इस बात पर जोर दिया गया है कि अनन्त समय में परमेश्वर अवज्ञाकारियों पर अपना क्रोध भेजेगा। परमेश्वर का क्रोध मनुष्य के क्रोध की तरह प्रतिशोधी या बेकाबू नहीं है इसके बजाय वह पाप और दुष्टता के विरूद्ध अत्यंत सख्त है, जो कि बातों के निपटारे की मांग करता है। जैसा कि उसका प्रेम हमारे प्रेम से गहरा है, तो उसका क्रोध भी अधिक प्रचण्ड है, जो कि अवज्ञाकारियों के विरूद्ध होगा (2:16; प्रेरितों के काम 17:28-31; रोमियों 2:5-8)। परमेश्वर नहीं चाहता कि मनुष्य इस तरह से पीड़ित हों। वह उनको बचाना चाहता है या उनको उस क्रोध से दूर रखना चाहता है अर्थात इस दण्ड से, इसलिए मसीह के द्वारा हमारे लिए बचाव का उपाय किया गया है। थिस्सलुनीके के लोग (और सभी विश्वासयोग्य मसीही) यीशु के द्वारा उस क्रोध से बचाए गए हैं।

अनुप्रयोग

वर्षों पहले, एक सुसमाचार प्रचारक ट्रेन से यात्रा द्वारा एक सभा में प्रचार के लिए जा रहा था। उस ट्रेन में बैठने के स्थान के गलियारे की दूसरी ओर उसके सामने एक मसीही डिनोमिनेशन का प्रचारक भी बैठा हुआ था। यात्रा के दौरान, उन दोनों में प्रभु के पुनः आगमन के बारे में बातचीत होने लगी। डिनोमिनेशन के प्रचारक ने कहा, प्रभु ने मुझ से कहा है कि वह तीन वर्ष के भीतर ही आ जाएगा। सुसमाचार प्रचारक ने कहा, प्रभु ने मुझे मरकुस 13:32, 33 में बताया है कि उसने आपसे ऐसा कुछ नहीं कहा। निःसंदेह वह सुसमाचार प्रचारक ही सही था। कोई नहीं जानता है कि प्रभु लौट कर कब आएगा, लेकिन हम उसके आने के बारे में थिस्सलुनीकियों को लिखी गई पौलुस की दोनों पत्रियों से बहुत कुछ सीखते हैं।

पहला तथा दूसरा थिस्सलुनीकियों प्रभु यीशु के पुनःआगमन पर केन्द्रित हैं। पहला थिस्सलुनीकियों दूसरे आगमन के बारे में एक संतुलित दृष्टिकोण देता है। यह पाठकों को निमंत्रित करता है कि वे भूतकाल में हुए अपने मनपरिवर्तन का ध्यान करें (1:1-3:13), अपने अन्दर अपने समर्पण पर विचारें (4:1-12), और भविष्य में होने वाले मसीह के आगमन की ओर दृष्टि लगाएं (4:13-5:11)।

प्रकाशन की प्रक्रिया (1:1)

पवित्र शास्त्र का एक बड़ा भेद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वे आए हैं। यद्यपि हम परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए जाने की बारीकियों को तो नहीं जान सकते हैं, हम मुख्य बातों को जान सकते हैं।

1 थिससलुनीकियों की इस प्रथम आयत में, यह प्रकट होता है कि कैसे परमेश्वर अपने वचन को हमारे पास लेकर आया।

परमेश्वर ने अपना प्रकाशन पवित्र आत्मा के द्वारा दिया। यह सत्य इस प्रथम आयत में निहित है, परन्तु 5 आयत का यह स्पष्ट कथन है। यहां हम बाइबल के प्रकाशन के दिव्य स्रोत को देखते हैं।

पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को स्मरण कराया कि वे पत्रियां उन पर अनिवार्य है। वे समस्त कलीसिया के लिए थीं (1 थिस्सलुनीकियों 5:27)। कलीसिया को उन लोगों पर विशेष ध्यान रखना था जो पत्रियों का पालन नहीं करते थे (2 थिस्सलुनीकियों 3:14)। जैसा उसने कुलुस्सियों से कहा, इन पत्रियों को मण्डली में सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाना था (कुलुस्सियों 4:16)। पौलुस के निर्देश इन पत्रियों के पीछे पवित्र आत्मा की प्रेरणा की ओर संकेत करते हैं।

उसका प्रकाशन हम तक मानवीय माध्यम से होकर आया। परमेश्वर ने अपनी इच्छा पूरी करने के लिए मनुष्यों का उपयोग किया। जब पौलुस थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को लिख रहा था, तब परमेश्वर ने इस प्रेरित संदेशवाहक का मार्गदर्शन पवित्र आत्मा के द्वारा किया। यहां हम प्रकाशन का मार्ग देखते हैं।

परमेश्वर ने हमें अपना वचन लेखों के द्वारा दिया। यह लिखित संदेश था, ऐसा प्रकाशन जिसे अपने हाथ में पकड़ा और पढ़ा जा सकता था। इस विचार में हम

प्रकाशन का माध्यम देखते हैं। परमेश्वर हमारे मन से होकर हमें खोजता है, वह चाहता है कि हम उसके संदेश को पढ़ें, समझें और फिर उस पर कार्य करें।

ईश्वरीय प्रकाशन एक परिस्थिति के द्वारा आया। परमेश्वर ने एक स्थानीय मण्डली की आवश्यकता के लिए दिए गए प्रकाशन का उपयोग सारे संसार के लिए उपयोगी सत्य को प्रगट करने के लिए किया। उसने कुछ विशेष लिया और उसे सामान्य बना दिया। ए.टी. रॉबर्टसन ने कहा, पौलुस की पत्रियां समय के लिए लेख हैं, वास्तविक आपातकाल का सामना करने केलिए लिखी गई।

पौलुस को थिस्सलुनीकियों की, जो उस समय सताव का सामना कर रहे थे, चिंता थी। वे विश्वास में तरुण थे और उनमें कई बातों को लेकर भ्रांतियां थीं, विशेषकर यीशु के पुनः आगमन के विषय में। पौलुस ने अपनी यह पहली पत्री उन में से कुछ भ्रांतियों के निवारण के लिए लिखी। यहां हम उस परिस्थिति को देखते हैं जिस के कारण परमेश्वर के इस प्रकाशन का जन्म हुआ।

परमेश्वर का प्रकाशन कितना महान है। इसके बिना, हमारे लिए उसकी इच्छा जानने की कोई आशा नहीं है। इसके साथ, हमारे पास हर समय और अनंतकाल के लिए उसका सिद्ध मार्गदर्शन है। इसे मनुष्य का वचन नहीं वरन परमेश्वर का वचन जानकर स्वीकार करना चाहिए।

अपने विश्वास को साझा करना

ब्रूस मैक्लार्टी

मसीही विश्वास कभी भी निजी होने के लिए नहीं दिया गया था। आरंभ से ही यह लोगों में अनुभव किया जाना था (प्रेरितों 2:41-7)। मसीही लोग मिलकर प्रार्थना करते, खाते, आराधना करते, बांटते, जश्न मनाते, और दुख सहते थे। अकेले मसीही का विचार सोचा भी नहीं जा सकता था।

जिस बात को कभी सोचा भी नहीं जा सकता था, आज वही बात आम पाई जाती है। व्यक्तिगत विश्वास होना बहुत लोगों द्वारा हर मसीही की सबसे बड़ी प्राप्ति के रूप में देखा जाता है और सहभागिता को एक वैकल्पिक विचार अतिरिक्त वस्तु के रूप में देखा जाता है।

फिलेमोन के नाम पौलुस का पत्र अत्यधिक स्वायतत्त के इस सांस्कृति जहर का जबर्दस्त विषनाशक है। उसका दास उनेसिमुस भाग गया था और अपने स्वामी का उसने काफी नुकसान किया था। हो सकता है कि उसने उसकी चोरी भी की हो (आयत 18)। पौलुस ने उनेसिमुस को अपने स्वामी के पास वापस भेजते हुए, उनके मिलाप में सहायता के लिए फिलेमोन के नाम एक पत्र भेजा। उस पत्र में पौलुस ने प्रतिज्ञा के करूणामय शब्दों के साथ फिलेमोन को प्रोत्साहित किया तेरा विश्वास में सहभागी होना तुम्हारी सारी भलाई की पहिचान के लिए प्रभावशाली हो। अन्य शब्दों में विश्वास बांटने के लिए था।

फिलेमोन के सामने परेशान करने वाली बात उसके साथ अकेले निपटने की नहीं थी। यह विश्वास की बात थी जिसे शेष कलीसिया के साथ साझा किया जाना आवश्यक था। मसीही लोगों के रूप में जो कुछ हम करते हैं, मसीह के लिए करने से हम अकेले नहीं, बल्कि उसके सम्मान में रहते, सीखते और बढ़ते हैं।

कठिन लोग (आयत 6)

हर किसी का कठिन लोगों से वास्ता पड़ता है। उनसे बचा नहीं जा सकता। हर कलीसिया में चाहे वह बड़ी हो या छोटी, पीटने वाला, आलोचना करने वाला, शिकायत करने वाला या स्वार्थी एक आधा तो होता ही है, जो मण्डल की ऊर्जा और संसाधनों को बड़ी मात्रा में खर्च करवा देता है। परमेश्वर ने इस बहुत खर्चीले लोगों को एक ही जगह रखकर हर किसी को अकेले क्यों नहीं छोड़ दिया?

पहली बात तो यह कि कठिन लोगों के बिना कलीसिया की धारणा आकर्षक लग सकती है। परन्तु थोड़ा सा और ध्यान देने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि कठिन लोग (और कठिन परिस्थितियां) लोगों को बढ़ने में सहायता करते हैं। कोई धीरज में कैसे बढ़ सकता है, जब तक उसका धीरज परखा ही न जाए? कोई क्षमा देने में कैसे बढ़ सकता है, जब तक पहले वह आहत न हुआ हो। कोई गलतियां रखने का हिसाब न करना कैसे सीख सकता है, जब तक उसकी गलतियों का हिसाब न रखा जा सके? कठिन लोग और कठिन परिस्थितियां वास्तव में कलीसिया के लिए परमेश्वर के बड़े दानों में से हो सकते हैं।

फिलेमोन के नाम पत्र से समझ में आता है कि कलीसियाओं में लोगों के बीच झगड़ों का सामना कैसे करना पड़ सकता है। आमतौर पर परेशानियां आने पर लोग घबरा जाते हैं और निराशा में सिर पटकने लगते हैं, पर कठिनाईयां कलीसिया के सामने बढ़ने के अद्भुत अवसर भी लाती है। फिलेमोन के नाम धमाकाखोर पत्र लिखते हुए पौलुस ने उन बड़ी सम्भावनाओं को देखा जहां से यह कष्टदायक समस्या कलीसिया को आगे ले जा सकती थी। उसकी प्रार्थना थी कि परिस्थिति के सुलझ जाने पर फिलेमोन और गहराई से मसीही विश्वास की जाए, अपने विश्वास को और गहराई से पाए, और सच्चाई से अपने विश्वास को बताए, और अपने ऊर्जावान नमूने के द्वारा कलीसिया को मजबूत करे। कठिनाई कलीसिया में होने वाली बेहतरीन चीज हो सकती है।

हमें एक-दूसरे की आवश्यकता है (आयत 6)

अमेरिका के एक कबीले के प्राचीन समय की एक अद्भुत कहानी बताई जाती है, जिन्होंने एक नदी के किनारे डेरा लगाया था। एक दिन उन्होंने ऊपर की ओर दृष्टि करके अपने शत्रु को उन पर आक्रमण करने के लिए पहाड़ों से नीचे आते हुए देखा। उन्हें घेरा गया और हर किसी को मालूम था कि नदी इतनी चौड़ी है कि शक्तिशाली तरंगों द्वारा बहा दिए जाने के बिना नदी के पार जाने के लिए ताकतवार से ताकतवार लोग भी इतनी फुर्ती नहीं कर सकते। उनके पास कोई चारा नहीं था इसलिए ताकतवर योद्धाओं ने छोटे और कमजोर लोगों को अपने कंधों पर उठाया

और नदी में कूद पड़े। वे चकित रह गए कि वे सुरक्षित दूसरी ओर पहुंच गए थे। ऐसा लगता है कि बच्चों और कमजोरों का भार इतना था कि योद्धाओं के कदम नदी के तल पर सुरक्षित ढंग से पड़ गए थे। कबीले के हर व्यक्ति चाहे वह कमजोर हो या बलवान, का जीवित रहना आवश्यक था।

क्या तुम्हें हमारी कोई बात पसंद नहीं है? (आयत 7)

एक प्रचारक किसी बड़े नगर में रहता और काम करता था और रविवार के दिन उसे प्रचार करने के लिए एक छोटे गांव की कलीसिया में जाना पड़ता था। वह इस मण्डली के लिए कई महीनों से प्रचार कर रहा था कि एक रविवार की रात कुछ ऐसा हुआ जिससे अपनी सेवकाई को देखने का उसका नजरिया सदा के लिए बदल गया। भाइयों में प्रचार करने और उनसे मिलने के बाद एक दिन वह अपने घर जाने के लिए कार में बैठा। कार को पार्किंग में निकालने से पहले मण्डली की एक महिला ने हाथ हिलाया और उससे बात करने के लिए उसके पास गई। शीशा नीचे करने पर वह देख सकता था। कि वह चिल्ला रही थी, उसने पूछा कि क्या मुश्किल है तो उस स्त्री ने उत्तर दिया, क्या आपको कोई बात पसंद नहीं है?

उस महिला की सोच, जिसने प्रचार को बुरी तरह से स्तब्ध कर दिया था, यह थी कि प्रचारक अपने प्रवचनों में जो कुछ भी कहता था, कलीसिया उसे कर नहीं पा रही थी। घर को जाते हुए अपने मन में उसने उन प्रवचनों पर ध्यान किया जिन्हें वह सुनाता आ रहा था। उसे समझ आया कि चाहे वह देहात की उस कलीसिया से प्रेम करता था, पर उसके प्रवचन विशेष रूप में उन बातों पर थे, जिन्हें वे नहीं कर रहे थे। उसी रात उसने निर्णय लिया कि वह भविष्य में अपने प्रचार में और संतुलित करेगा। अब उसे समझ आया कि मसीही लोग जो सही कर रहे हैं उसमें उन्हें पक्का किए जाने की आवश्यकता है।

फिलमोन के नाम पत्र में पौलुस ने देने के लिए एक कठिन संदेश दिया। उसे सरकार, कानून संस्कृति और प्रबंधों के बारे में संवेदनाओं पर विचार करना आवश्यक था। यदि उसका संदेश सही ढंग से ग्रहण न किया जाए तो इससे क्रोध भड़क सकता था और कलीसिया में फूट पड़ सकती थी। मुद्दे को अपने हाथ में लेने से पहले उसने इस बात की पुष्टि करने के लिए कि जो कुछ फिलेमोन पहले से सही कर रहा है कुछ बातें कहीं। उसने उसे प्रिय सहकर्मी (आयत 1) कहते हुए सम्बोधित किया और उसे बताया कि वह फिलेमोन द्वारा दिखाए गए प्रेम और विश्वास के लिए परमेश्वर का धन्यवादी है (आयतें 4, 5)। उसने यह स्मरण करते हुए कि फिलेमोन ने कई जगहों पर मसीही लोगों से प्रेम करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के द्वारा उसे बहुत आनन्द और शांति दी थी (आयत 7)। जो कुछ फिलेमोन पहले से कर रहा था, उसकी तारीफ करने के बाद ही पौलुस ने उन बातों की ओर ध्यान दिलाया, जिन्हें फिलेमोन के लिए अभी करना आवश्यक था।

घर को तोड़ने वाले
(गलातियों 5:19-21)
कोय रोपर

इस पाठ के साथ हम घर जहां आत्मा वास करता है, पर अपनी शृंखला समापन करते है। हमने इसशृंखला में एक सफल घर अर्थात् एक खुशहाल घर, एक स्थिर घर, जो बिखरने के बजाय इकट्ठा रहता है, रखने के ढंगों पर जोर दिया है। ऐसे घर में हर व्यक्ति न केवल व्यक्तिगत परिपूर्णता के बोध को, बल्कि परमेश्वर के साथ सही संबंध भी पाता है।

हमारा मानना है कि यह परिणाम घर के लोगों में गलातियों 5:22, 23 में बताए आत्मा का फल जैसे, प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम देते हैं।

परन्तु आत्मा के फल को पाने में रूकावटें भी हैं और इस कारण सफल घर पाने में भी रूकावटें हैं। कुछ बातें खुशहाल घर होने से हमें रोकती है, या खुशहाल घर को तोड़ सकती हैं। हम उन्हें 'घर को तोड़ने वाले' नाम दे रहे हैं।

घर को तोड़ने वाले शब्द का इस्तेमाल कई बार उस स्त्री को किया जाता है जो किसी आदमी को फुसलाती है, जिसका परिणाम यह होता है कि वह व्यक्ति अपनी फुसलाने वाली के साथ रहने के लिए अपनी पत्नी और परिवार को छोड़ देता है। वह घर टूट जाता है, तो उस स्त्री को घर को तोड़ने वाली कहा जाता है।

इस पाठ में जिनको हम बात कर रहे हैं वे सबसे अधिक फुसलाने वाली स्त्री से भी कहीं अधिक घर को तोड़ने वाली हैं। वे घर को तोड़ने वाली कौन सी बातें हैं? पौलुस ने उन्हें शरीर के काम कहा है। गलातियों 5:19-21 में उसने उनके बारे में बताया-

शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात व्यभिचार गंदे काम, लुचपन। मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके ऐसे और काम हैं, इनके विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।

हम इन, शरीर के कामों पर चर्चा करके देखना चाहते हैं कि हम वास्तव में अपने घरों को कैसे तोड़ते हैं।

शरीर के काम

पापों की पौलुस की सूची के पहले समूह में व्यभिचार गन्दे काम, और लुचपन आते हैं। ये शरीर के पाप हैं। इस आयत को घर पर लागू करने से हम यह जोर दे सकते हैं कि शरीर के पाप घर को तोड़ सकते हैं।

व्यभिचार में अनैतिकता ही आती है। हमने पति और पत्नी के एक-दूसरे के

वफादार होने की आवश्यकता पर पहले ही जोर दिया है। हमने कहा है कि व्यभिचार विवाह को किसी भी बात से जल्दी खत्म कर सकता है। व्यभिचार या अनैतिकता में समलैंगिकता का पाप भी है। (रोमियों 1:26, 27), जो बहुलैंकिता की तरह ही विवाह के बर्वाद कर सकता है। वास्तव में समलैंगिकता परमेश्वर की परिभाषा के अनुसार घरों को बनाने में भी रूकावट डालती है। इसके अलावा शरीर के पापों के आमतौर पर सांसारिक परिणाम होते हैं। उदाहरण के लिए जैसी कुछ बीमारियां और अवैध गतिविधियों से ही पनपती हैं, जो बीमारी और अन्त में मृत्यु का कारण बनती है। ऐसे परिणाम घरों को तोड़ सकते हैं। फोर्निकेशन अविवाहित लोगों के बीच शारीरिक संबंध की अनैतिकता के अधीन ही आता है। अविवाहित लोगों के बीच अनैतिकता से गुप्त रोगों जैसे दुष्परिणाम मिल सकते हैं। बिना योजना के माता-पिता बनना या नामसझी से किया गया विवाह लगभग आरंभ होने से पहले ही घर को खत्म कर देता है।

गंदे काम और लुचपन। शरीर के पापों की और किस्में गंदे काम और लुचपन (अशुद्धता और कामुकता) शब्दों द्वारा सुझाए जाते हैं। शरीर के इन कामों में (क) ऐसे व्यवहार में लिप्त होता है, जो विपरीत सैक्स को आकर्षित करे या फुसलाए (ख) ऐसी गतिविधियों में भाग लेना जो सैक्सुअल लाइसेंस को बढ़ावा देती है और (ग) आज के समाज में आसानी से कामुक या नंगी तस्वीरें देखने से मन में कामुक विचार आ सकते हैं। ऐसा व्यवहार न केवल परमेश्वर को नाराज करता है, बल्कि और पाप करने या सैक्स के लिए किसी के विचार को खत्म करने का काम कर सकता है। घर के लिए दोनों ही हानिकारक हैं।

धार्मिक झगड़ा

दिए गए पापों के दूसरे समूह में धार्मिक पाप अर्थात् मूर्तिपूजा और टोना आते हैं। गलातिया के मसीही लोगों को पेश ये धार्मिक मुद्दे दिखाए जाते हैं। अपने समाज में हमारे सामने कई अलग-अलग मुद्दे हैं पर हम इस विचार को यह ध्यान दिलाते हुए लागू कर सकते हैं कि धार्मिक झगड़ा घर को तोड़ देगा।

बेशक, गलातिया की समस्या केवल घर में धार्मिक झगड़े की नहीं थी, चाहे नये नियम के समय में कई बार ऐसी समस्याएं आती थीं क्योंकि मसीही लोग गैर मसीही लोगों से विवाह कर लेते थे। इसके विपरीत यहां जिस शिक्षा की पौलुस ने चेतावनी दी है वह मूर्तिपूजा और/या जादू टोना करने में जाने की है। स्पष्टता मूर्तिपूजा सहित हमें धर्म की किसी भी किस्म को स्वीकार करने के विरूद्ध चेतावनी की आवश्यकता है, जिसमें आज की भौतिक वस्तुओं की पूजा है।

इस चेतावनी को घर में लागू करने का शायद सबसे बढ़िया काम घर में धार्मिक झगड़े के बुरे प्रभावों की ओर ध्यान दिलाना है। घर को किस प्रकार का धार्मिक झगड़ा नष्ट कर सकता है?

जब कोई मसीही व्यक्ति गैर-मसीही से विवाह कर लेता है, तो झगड़े और समस्याएं आनी लगभग पक्की है। वह दम्पत्ति आराधना कहां करेगा? अपने शेष

जीवनों में प्रत्येक सप्ताह उन घण्टों के दौरान जब कलीसिया इक्ट्ठा होती है, दोनों के अलग-अलग जाने पर परिवार शायद ही खुशहाल रहे। यदि मसीही व्यक्ति प्रभु की कलीसिया को छोड़ता है, तो विवाह अपना निर्णायक प्रभाव खो देता है, प्रभु एक सेवक खो देती है और मसीही व्यक्ति अपने प्राण की हानि उठाता है। बच्चों की भी समस्या है कि वे किस विश्वास को मानेंगे? वे कहां आराधना करेंगे? यह तय करने के लिए कि कौन किसके साथ और कहां जाए, हिसाब लगाने के बावजूद, यह तथ्य रह जाता है कि पति और पत्नी अपने जीवन में एक नहीं है। जब पति और पत्नी धार्मिक रूप में अलग हों, तो झगड़ा पक्का है।

समाधान क्या है? विश्वासी मसीही से विवाह। यदि आप पहले से किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह कर चुके हैं जिसका विश्वास वह नहीं है, जो आपका है, तो दोनों को परमेश्वर केवचन से इकट्ठे अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि आप वे मसीह में एक हो सकें।

क्रोध, झगड़ा और स्वार्थ

पापों के तीसरे समूह में शत्रुता, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध का फूटना विरोध फूट, विधर्म, डाह शामिल हैं। हम इन चेतावनियों को यह कहकर घर में लागू कर सकते हैं कि क्रोध और झगड़ा घर को तोड़ देंगे।

इन शब्दों का क्या अर्थ है? पहले शब्द का अर्थ दो वर्गों, देशों और लोगों की तरह वैर है। अनुवाादित शब्द झगड़ा (असहमति) संसार और कलीसिया दोनों में घृणा का स्वाभाविक परिणाम है। ईर्ष्या या जोश और क्रोध का इस्तेमाल नये नियम में अच्छे अर्थ में हो सकता है, पर यहां इनका इस्तेमाल बुरे अर्थ में है। जब जोश और क्रोध स्वार्थी उद्देश्यों से हों और घमण्ड को चोट पहुंचाएं, तो वे बुरे हैं और दूसरों को हानि पहुंचाते है। झगड़ा जिसका अनुवाद और कहीं स्वार्थ की अभिलाषा या स्वार्थ हुआ है और मुख्यतया काम के लिए स्वार्थी और अपने आपको बड़ा बनाने का ढंग है। फूट और विधर्म का संबंध वे मामले हैं, जिन में लोग बंटे हुए हैं और कलह बढ़ती है।

बेशक पौलुस इन समस्याओं की बात मुख्यता ऐसे नहीं कर रहा था जैसे वह घर में हो। यदि उसके मन में कोई भी संदर्भ था तो वह कलीसिया ही थी, जिसमें क्रोध, बैर और गुटबाजियां आमतौर पर होती हैं।

जब घर में ऐसी स्थिति होती है यानी जब उस घर में ये गुण दिखाई दें तो वह घर या तो पहले से टूटा हुआ है और केवल खोल की तरह है, या फिर टूटने के कगार पर है। यह बात सच है। घर में चाहे कितने भी लोग क्यों न हों, चाहे माता-पिता और बच्चे ही हों या केवल पति और पत्नी हो। वास्तव में कई घर इन पापों के कारण टूट गए। वे घर जिनमें किसी ने व्यभिचार नहीं किया, वे घर जिनमें पति-पत्नी दोनों मसीही थे, और वे घर जो वर्षों से इक्ट्ठा थे, बैर, झगड़े, ईर्ष्या और क्रोध के कारण टूट गए।

घर में ऐसे पापों का पता चलने पर कोई ध्यान दिलाने वाली बात है? हां गलातियों 5:20ख में पौलुस द्वारा बताए गए पापों के कारण दो मुख्य बातें बनती है, स्वार्थ और समस्याएं खड़ी होने पर उन्हें न सुलझा पाना।

स्वार्थ-घर में हों या बाहर अपनी मर्जी मनवाने या अधिक लाभ लेने की जिद पर अड़े व्यक्ति का विचार किए बिना। कालांतर में स्वाग्रह और स्वाभिमान पर काफी कुछ कहा गया है। हमें स्वाभिमान की आवश्यकता है। स्वाभिमान की कमी के बजाय बड़ी समस्या स्वार्थ की है। घर में क्रोध और झगड़े की समस्या का बेहतर समाधान शायद यही है कि मसीही लोग स्वार्थी न हों, अपनी मर्जी न मनवाएं (तुलना 1 कुरिन्थियों 13:5), बल्कि दूसरों को अपने से बेहतर मानें (फिलिप्पियों 2:3, 4) और दूसरों से अपने जैसा प्रेम रखें (मत्ती 22:39, देखें 7:12)।

समस्याओं से सही ढंग से पेश आने की नाकामी

किसी भी परिवार और घर में समस्याएं आती हैं। परन्तु बहुत बार उन नाराजगियों को उन लोगों के बीच में लाने के बजाय हम उन्हें छिपा लेते हैं। फिर वे बढ़ती रहती हैं और अन्त में झगड़े और फूट का कारण बनती हैं। एक-दूसरे के विरूद्ध किए गए हमारे पापों की परवाह करने के बजाय हम अपने लिए और परिवार के दूसरे लोगों के लिए उन पापों से इंकार करते हैं।

किसी ने कहा है-निष्पक्ष लड़ना सीखना आवश्यक है। यह बात सच है। इससे भी सच यह है कि हमें अपने व्यक्तिगत संबंध की समस्याओं के अर्थात बाइबल के यानी मसीही ढंग से निपटना सीखना आवश्यक है। हमें क्षमा मांगने और क्षमा मांगने को तैयार और क्षमा देने के योग्य होना आवश्यक है।

कड़वाहट मन में रखना, जो यह कहने का एक और ढंग है कि हम क्षमा करने से इंकार करते हैं, घर में झगड़े और टूटने का कारण होता है। घर में लोगों के लिए पौलुस की नसीहत मानने योग्य है, क्रोध तो करो, पर पाप मत करो, सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दो (इफिसियों 4:26, 27)।

मतवालापन

हमारे वचन पाठ में दिए गए शरीर के दो अंतिम कामों में पाप की चौथी किस्म है, मतवालापन और लीलाक्रीड़ा। हम इन विशेषताओं को यह कहकर घर पर लागू कर सकते हैं कि मतवालापन या और नशों की आदत घर को तोड़ सकती है।

हम जानते हैं कि मतवालापन क्या है। लीलाक्रीड़ा का संबंध शरबियों की शोर-शराबे वाली पार्टियों में होगा।

लीला क्रीड़ा के संबंध में हम शायद यह कह सकते है कि पार्टियां करना घर को तोड़ सकता है। वास्तव में कई घर तो इसलिए टूट चुके हैं क्योंकि पति या पत्नी को क्रीड़ा और रंगरलियां मनाना अच्छा लगता है। बेशक मनोरंजन का हर रूप घर के लिए खतरनाक नहीं, पर कुछ मनोरंजन इसे नष्ट कर देंगे। यह कहा जा सकता

है कि किसी भी प्रकार का मनोरंजन यदि अधिक हो जाए तो वह घर को तोड़ सकता है।

मतवालापन सदा से घर को तोड़ने वाली समस्या शराब पीने के दुष्प्रभाव से हो सकता है कि पता न चले। मतवालेपन पर इंटरनेट पर दी गई अधिकतर जानकारी चुटकुलों के रूप में है। एक हास्य कलाकार ने कहा, मैंने पीने की बुराइयों के बारे में पढ़ा, तो मैंने पढ़ना बंद कर देने का निर्णय लिया। परन्तु मतवालापन कोई मनोरंजन नहीं है। मतवालापन हंसी की बात नहीं है।

क्या शराबी पिता के बच्चे को लगता है कि मतवालापन हंसी की बात है? उसका पिता नौकरी नहीं कर सकता क्योंकि वह शराब पी लेता है, सुबह उठ नहीं पाता और काम पर देरी से जाता है, या पीकर काम पर चला जाता और नौकरी से निकाल दिया जाता है। परिणाम में निर्धनता मिलती है। उसके अलावा जब पिता पी लेता है, तो वह क्रूर होकर अपनी पत्नी को गालियां निकालता है और अपने बच्चों को पीटता है। क्या ऐसा बच्चा मान यह लेगा कि मतावालापन हंसी की बात है?

क्या उस छोटे लड़के की मां जिसके ऊपर से शराबी ड्राइवर ने गाड़ी चढ़ा दी, मानेगी कि मतवालापन हंसी की बात है? क्या अभी भी उस जवान अविवाहित महिला के लिए जो इस कारण गर्भवती हो गई क्योंकि उसने शराब पी रखी थी, मजाक या मनोरंजन की बात है? क्या बलात्कार की शिकार उस स्त्री के लिए यह मनोरंजन की बात है जिस पर शराबियों की एक टोली ने जिन्होंने बहुत पी ली थी उसके साथ कुछ मौज मस्ती करने के लिए उस पर हमला कर दिया?

घरेलू हिंसा में मतवालापन पत्नी की पिटाई या बच्चों की पिटाई में मुख्य योगदान देता है। यह झूठ बोलने या उस छल या शारीरिक पाप करने, जिम्मेदारियों को मानने में नाकाम होने और निर्धनता और तलाक का कारण बनता है।

मतवालापन मनोरंजन नहीं बल्कि एक पाप है। पुराना नियम मतवालेपन के विरूद्ध चेतावनी देता है (नीतिवचन 23:29-35) और नियम स्पष्ट कहता है कि मतवालापन पाप है (रोमियों 13:13,14, 1 कुरिन्थियों 5:11-13, 6:9,10 इफिसियों 5:18)। बाइबल में मतवालेपन के कुछ परिणामों के उदाहरण मिलते हैं। नूह के मतवालेपन के कारण उसके पुत्र को श्राप मिला। लूत का मतवालापन उसकी अपनी दो बेटियों के साथ गोत्र गमन का कारण बना (उत्पत्ति 9:20-27, 19-38)।

स्पष्टतया मतवालापन घर को तोड़ने वाला है। इस समस्या पर मसीही व्यक्ति की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए। पहले तो मसीही व्यक्ति को नशे से बचना चाहिए। थोड़ा-सा नशा भी खतरनाक हो सकता है। इसके अलावा मसीही व्यक्ति को किसी ऐसे पुरुष अथवा स्त्री से विवाह करना चाहिए जो शराब न पीता हो और अपने बच्चों को शराब पीने की बुराइयां बताएं। मतवालापन घर को तोड़ सकता है।

आपने सुना होगा

जॉन स्टेसी

आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि हमें ईस्टर मनाना चाहिए। ईस्टर का जन्म अन्य जाति तथा यहूदी मतों के विचारों और मसीहीयत की कुछ शिक्षाओं से मिलकर हुआ था। ईस्टर शब्द बाइबल में कहीं पर भी नहीं मिलता। ईस्टर शब्द को ईस्टरे नाम की एक देवी से लिया गया है जिसे इंगलैंड में कुछ लोग पूजते थे और अप्रैल के महीने में उसके आगे चढ़ावे चढ़ाते थे। अंग्रेजी भाषा में बाइबल का जो अनुवाद सबसे पहले राजा जेम्स ने करवाया था उसमें एक जगह, प्रेरितों 12:4 में, अनुवादकों ने फसह शब्द को गलती से ईस्टर अनुवाद कर दिया था। यूनानी भाषा में यह शब्द था पस्का। बाइबल में यह शब्द अट्ठाईस बार आया है और सभी अन्य जगह पर इसका अनुवाद फसह किया गया है। प्रेरितों 12:1-4 में हम पढ़ते हैं कि हैरोदेस ने फसह को ध्यान में रखकर ही यह फैसला किया था कि पतरस को वह फसह के बाद ही लोगों के सामने लाएगा। हेरोदेस मसीहीयत के विरूद्ध था, परन्तु वह यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता था। इसीलिए उसने यहूदियों की फसह का ध्यान रखा था। पर यदि वह कोई एक मसीही त्योहार होता तो उससे उसे कोई अन्तर नहीं पड़ता। प्रेरितों की मृत्यु के बाद जो लोग यहूदी मत को छोड़कर मसीही बने थे वे फसह को मनाते थे परन्तु मसीह की शिक्षानुसार नहीं, पर यहूदी मत से प्रभावित रहकर वे ऐसा किया करते थे। जबकि यहूदी मत से निकले मसीही पस्का अर्थात् फसह को मानते रहे, दूसरी ओर अन्य जाति के लोग ईस्टर देवी का दिन मनाते थे, किन्तु ये दोनों ही एक दूसरे से भिन्न थे। किन्तु समय के व्यतीत होने के साथ-साथ ईस्टर मसीहीयत में जोड़ दिया गया और लोग उसे मसीह के जी उठने के दिन के रूप में मनाने लगे।

प्रभु यीशु ने सिखाया था कि उसके लोग परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई के साथ करेंगे। (यूहन्ना 4:24)। सो क्योंकि बाइबल में ईस्टर शब्द का कहीं पर भी कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए हम यदि परमेश्वर की उपासना सच्चाई के साथ करना चाहते हैं तो हम ईस्टर नहीं मना सकते। ईस्टर परमेश्वर की शिक्षा नहीं है पर मनुष्यों का बनाया धर्मोपदेश है। जो लोग मसीही हैं वे मसीह के मुर्दों में से जी उठने की याद को, प्रत्येक प्रभु के दिन, प्रभु-भोज में भाग लेकर मानते हैं। (मत्ती 26:26-28, प्रेरितों 207, 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति यीशु की आज्ञा को मानकर जल के भीतर जाकर उसमें से बाहर आता है तो उससे भी हमें मसीह के पुनरुत्थान की घटना याद हो आती है। (रोमियों 6:3-6)। फिर याद रखें कि 2 यूहन्ना 9 में लिखा है कि जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी

है और पुत्र भी। यह बात ध्यान में रखकर, क्या हम मसीह में बने रह सकते हैं, यदि हम ईस्टर जैसी मनुष्यों की शिक्षाओं को माने?

कुछ लोगों का विचार है कि मसीह की कलीसिया भी एक सम्प्रदाय है। सम्प्रदाय का अर्थ है, एक हिस्सा या किसी वस्तु का एक टुकड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से एक सम्प्रदाय वह है जो किसी संगठन से अलग होकर अपने कुछ निजि विचारों तथा सिद्धांतों को मानता है। सो एक सम्प्रदाय सम्पूर्ण कलीसिया को नहीं कहा जा सकता। किन्तु सम्प्रदाय एक गुट या एक समुदाय है, जो किसी मंडली में से निकलकर अलग हुआ है। मत्ती 16:18 में प्रभु यीशु ने कहा था कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। यहां कलीसिया को एक विश्वव्यापी संगठन कहकर सम्बोधित किया गया है। कलीसिया केवल एक ही है, यद्यपि उसी एक कलीसिया की अनेकों स्थानीय मंडलियां विभिन्न स्थानों पर पाई जा सकती है। कलीसिया केवल एक है, और वह कोई सम्प्रदाय नहीं है।

कुछ समय पूर्व जब एक फिरौन की कब्र को खोदा गया था, तो उसके भीतर कुछ गेहूं के दाने मिले थे। वे दाने अभी भी उपजाऊ थे। सो जब उन्हें बोया गया तो दो हजार साल पुराने उन बीजों से गेहूं की फसल की उत्पन्न हुई। इसी प्रकार परमेश्वर के राज्य का बीज, अर्थात परमेश्वर का वचन (लूका 8:11) यदि आज भी लोगों के मनों में बोया जाए, बिना किसी प्रकार की मिलावट के, तो आज भी उससे केवल मसीही और केवल मसीह की कलीसियाएं (प्रेरितों 11:16) ही उत्पन्न होंगे, जैसे कि पहिली शताब्दी में हुआ था। केवल परमेश्वर का वचन ही लोगों के मनों में बोने से एक भी सम्प्रदाय पैदा नहीं हो सकता। यदि लोग आज भी केवल वैसे ही मसीहीयत को मानें जैसे कि आरंभ में होता था, तो सारे संसार में केवल मसीह की कलीसियाएं ही विद्यमान होंगी। साम्प्रदायिक कलीसियाएं आज इसलिये विद्यमान है क्योंकि बाइबल के अतिरिक्त बहुत सी अन्य बातों को, जो कि मनुष्यों की शिक्षाएं हैं, माना और सिखाया जाता हैं।

वर्षों से लोगों को यह सिखाया जा रहा है, कि यूहन्ना 15:1-6 के अनुसार कलीसिया अनेकों डालियों में बंटी हुई है, जबकि वहां डालियां यीशु ने अपने चेलों को कहकर सम्बोधित किया था, कलीसिया को नहीं। वास्तव में बाइबल बड़ी ही स्पष्टता से कहती है, कि कलीसिया केवल एक ही है। पौलुस ने इफिसियों 4:4-5 में कहा था कि एक ही देह है और एक ही विश्वास देह बाइबल में कलीसिया को कहा गया है। कुलुस्सियों 1:18 के अनुसार और वही (मसीह) देह, अर्थात कलीसिया का सिर है, मैं आपसे निवेदन करके यह कहना चाहता हूं, कि आप बाइबल में से पढ़कर स्वयं इस बात को मालूम करें कि परमेश्वर कलीसिया के बारे में क्या कहता है। यीशु ने कहा था, कि तुम सच्चाई को जानोगे, और सच्चाई तुम्हें स्वतंत्र करेगी।